

AKSHARDHAM TEMPLE, NEW DELHI AND PRAMUKH SWAMI MAHARAJ

The Swaminarayan Akshardham in New Delhi is a breathtaking Cultural Complex capturing the Indian culture and heritage of India in all its grandeur and beauty. Inaugurated in November 2005, it has been visited by millions of visitors from across the globe. The complex is situated on the banks of the Yamuna River in the heart of the Indian Capital. It is a place of education, entertainment and enlightenment. It is a Unique Complex of Indian Art, Culture and Values, appealing to young and old, students and scholars, tourists and travelers, but most importantly to our people from both cities and villages, creating a deeper awareness, attraction and appreciation of art, culture and values. Akshardham experiences an enlightening journey through India's glorious art, values and contribution for the progress, happiness and harmony of mankind. It is dedicated to Bhagwan Swaminarayan and houses the Akshardham Mandir; three exhibition halls; a colorful water and laser spectacular show; a garden dedicated to the agrarian beauty of India.

Akshardham Mandir is 141' high, 316' wide and 356' long - is a marvel in marble and pink sandstone. It is profusely carved with ornate pillars, delicate statues and statuettes, filigreed arches and layers of sculpted Indian flora and fauna like elephants, swans, lotuses and leaves. The Exhibition buildings reflect the design and mood of the Monument with an elegant parikrama of hundreds of stone pillars. The exhibitions comprise of thematic settings, 3-D and walk-through dioramas, panoramic arenas, audio-visual areas, light and sound effects, laser media, multi-screen projections, audio-animatronic figures and surround experiences.

In the Hall of Values, light leads the visitors and sounds guide them from one display to another, from one value to another. Through a set of interesting incidents and events the eternal Vedic values of love, non-violence, perseverance, faith and tolerance are displayed. The hall ie. "Feel-Thru Spiritual India" takes viewers onto a visual journey through India, through all her breathtaking sceneries from the icy peaks of the Himalayas, through the vast waters of the Ganga to the shores of Kanyakumari. Apart from the thrills, it generates atmospheres of the famous pilgrim places of India in all their rhythms, rites and rituals. In the hall ie. "Sail – Thru Time" visitors sit in boats and sail through time, first to the cradle of world civilization - the Vedic era, and are able to encounter and experience re-creations of sounds and surroundings that display moving figures, sceneries and incidents. The Sahaj Anand Water Show is a breathtaking 24-minute presentation which unites a variety of intriguing media to bring to life a story from the Kena Upanishad which depicts the cycle of birth life and death. The Gardens of Akshardham are meditative and contemplative, with cultural spots, bronze sculptures and peaceful pockets.

The Organisation behind the creation and construction of Akshardham is BAPS Swaminarayan Sanstha and Pramukh Swami Maharaj who steered the BAPS Swaminarayan Sanstha as its President over the last seven decades.

H.D.H. Pramukh Swami Maharaj was a peaceful, humble, simple and spiritual personality who always lived for others and had dedicated his life to selfless service for the spiritual and social upliftment of society. He was an advocate of world peace, and revered as one of the most influential spiritual leaders of the world.

Pramukh Swami Maharaj or Shantilal Patel was born on December 7, 1921, to a farmer's family in Chansad near Vadodara in Gujarat. His parents, Motibhai Patel and Diwaliben were both spiritually inclined and were followers of the Akshar Purushottam faith.

As a young child, Shantilal was regarded honest, reliable, mature and kindhearted boy. In 1939 he became a renunciate and received initiation from his guru, Brahmaswarup Shastriji Maharaj, and was named Sadhu Narayanswarupdas. As a young ascetic Pramukh Swami Maharaj, or Sadhu Narayanswarupdas studied Sanskrit and Hindi Scriptures at Bhadaran and Khambhat, eventually earning the title "Shastri".

Pramukh Swami Maharaj was instrumental in the creation of about thousand temples and cultural centres such as Swaminarayan Akshardham in New Delhi and Gandhinagar and others around the world such as Kenya, Uganda, Tanzania, South Sudan, South Africa, Malawi, Botswana, UAE, Bahrain, Portugal, Belgium, UK, Canada, USA, New Zealand, Hong Kong, Singapore etc. The Complexes have become hallmarks in preserving culture and performing social services. The complexes are expressions of purity, love, sacrifice, faith, effort, dedication and other values. Pramukh Swami Maharaj intracted with many heads of States and spiritual leaders.

BAPS Swaminarayan Sanstha has an international network of over 5,100 centres, a million members and 50,000 volunteers performing 160 humanitarian activities. As a non-governmental organization in Consultative Status with the Economic and Social Council of the United Nations, BAPS provides its voluntary services in areas as diverse as educational, environmental, medical, social, cultural and spiritual.

He passed away on 13th August, 2016 in Sarangpur, Botad District Gujarat.

Department of Posts is pleased to release a se-tenant Commemorative Postage Stamps on "Akshardham Temple, New Delhi and Pramukh Swami Maharaj".

Credits:-

Text : Based on the material received from proponent
Stamp / FDC/Brochure : Smt. Alka Sharma
Cancellation Cachet

भारतीय डाक विभाग DEPARTMENT OF POSTS INDIA

अक्षरधाम मंदिर, नई दिल्ली
AKSHARDHAM TEMPLE, NEW DELHI



प्रमुख स्वामी महाराज PRAMUKH SWAMI MAHARAJ

अक्षरधाम मंदिर, नई दिल्ली और प्रमुख स्वामी महाराज

नई दिल्ली स्थित स्वामिनारायण अक्षरधाम एक अद्भुत सांस्कृतिक भवन समूह है जो भारतीय संस्कृति और धरोहर की भव्यता और सुंदरता का प्रतीक है। वर्ष 2005 में इसका उद्घाटन हुआ और तब से अब तक समूचे विश्व से यहां लाखों श्रद्धालु दर्शन का लाभ ले चुके हैं। अक्षरधाम, राष्ट्रीय राजधानी के केन्द्र में यमुना तट पर स्थित है। यह स्थान शिक्षा, मनोरंजन और प्रबोधन का केन्द्र है। यह भारतीय कला, संस्कृति और मूल्यों का एक अद्भुत संगम है, जो युवाओं एवं बुजुर्गों, छात्रों एवं विद्वानों, पर्यटकों और यात्रियों को समान रूप से अपनी ओर आकर्षित करता है। यह मुख्य रूप से हमारे शहरों और गांवों में रहने वाले लोगों में भारतीय कला, संस्कृति और प्राचीनतम मूल्यों के प्रति गहरी जागरूकता, आकर्षण और गौरव का संचार करता है। अक्षरधाम, भारत की भव्य कला, मूल्यों और मानवता की प्रगति, खुशहाली और मैत्री भाव के योगदान के माध्यम से प्रबोधन यात्रा का अनुभव कराता है। यह, भगवान स्वामिनारायण को समर्पित है। इसमें अक्षरधाम मंदिर, तीन प्रदर्शनी खंड हैं, एक रंगीन वॉटर और बेहतरीन लेजर शो है, एक सुन्दर बाग है, जो भारतीय कृषि सौन्दर्य को समर्पित है।

141 फीट ऊँचा, 316 फीट चौड़ा और 356 फीट लम्बा अक्षरधाम मंदिर संगमरमर और गुलाबी बलुआ पत्थर से निर्मित सौन्दर्य की अद्भुत कृति है। इसके अलंकृत स्तंभों, उत्कृष्ट प्रतिमाओं, लघु प्रतिमाओं, जरदोजी की मेहराबों पर महीन नक्काशी की गई है। इसके डिजाइन में भारतीय पशु-पक्षियों और वनस्पतियों जैसे हाथी, हंस तथा पर्ण पुष्प कमल चित्रित किए गए हैं। प्रस्तर के सैकड़ों स्तंभों की मनोरम परिक्रमा सहित, प्रदर्शनी भवन, इस स्मारक के डिजाइन और भावों का द्योतक है। प्रदर्शनी में थीमैटिक सैटिंग्स, 3-डी और वॉक- थ्रू डायोरामा, विशालदर्शी रंगभूमि, दृश्य-श्रव्य क्षेत्र, ध्वनि-प्रकाश प्रभाव, लेजर मीडिया, मल्टी-स्क्रीन प्रक्षेपण, ध्वनि, आकृतियां तथा सराउन्ड अनुभव समाहित है।

मूल्यों के हॉल में प्रकाश, दर्शकों का मार्ग आलोकित करता है और ध्वनि मार्गदर्शन – एक प्रस्तुति से दूसरी प्रस्तुति की ओर तथा एक मूल्य दूसरे मूल्य की ओर। प्रेरक प्रसंगों के द्वारा यहां प्रेम, अहिंसा, दृढ़ता, विश्वास और सहनशीलता आदि वैदिक मूल्यों को अद्भुत रूप से प्रस्तुत किया गया है। “आध्यात्मिक भारत का दर्शन” नामक हाल में बैठकर दर्शक चलचित्र के द्वारा अद्भुत भारत की यात्रा करते हैं। कहीं बृहद हिमालय की बफीली चोटियों के दर्शन होते हैं, तो कहीं पावन गंगा की कल-कल बहती धारा रोमांचित करती है और इसी तरह मनमोहक चित्रों के माध्यम से भ्रमण करते हुए कन्याकुमारी में समुद्र के किनारों तक पहुंचते हैं। रोमांचित करने वाले दृश्यों के अलावा यहां भारत के विभिन्न तीर्थों के महत्व के साथ-साथ संस्कारों एवं अनुष्ठानों की महत्वपूर्ण जानकारी भी लोगों को मिलती है। “अतीत की गौरव यात्रा” नामक हाल में दर्शक नौकाओं में बैठकर वैदिक काल की विकसित सभ्यता की यात्रा करते हैं। ध्वनि और वातावरण के अनुसार चलती-फिरती प्रतिमाओं, दृश्यों और घटनाओं को देखकर दर्शकों को ऐसा प्रतीत होता है मानो वे उसी काल में पहुंच गए हों। लगभग 24 मिनट चलने वाला ‘सहज आनन्द वाटर शो’ एक अद्भुत छटा प्रस्तुत करता है, जो विभिन्न प्रकार के मनोरम माध्यमों के संयोजन से केनोपनिषद् की एक कथा को जीवंत कर देता है। इसमें जन्म, जीवन और मृत्यु के चक्र को दर्शाया गया है। अक्षरधाम के सुन्दर उपवन मननशील और चिंतनशील हैं जहां सांस्कृतिक स्थल, कांस्य की प्रतिमाएं और शांति स्थल इसकी शोभा बढ़ाते हैं।

बीएपीएस स्वामिनारायण संस्था और प्रमुख स्वामीजी महाराज ने अक्षरधाम के सृजन और निर्माण का उत्तरदायित्व निभाया है, जिनकी अध्यक्षता में गत सात दशकों में बीएपीएस स्वामिनारायण संस्था को आगे बढ़ाया गया है।

परम पूज्य प्रमुख स्वामीजी महाराज एक शान्त, नम्र, सरल एवं आध्यात्मिक प्रवृत्ति की विभूति थे, जिन्होंने सदैव दूसरों के कल्याण के लिए कार्य किया तथा समाज और आध्यात्म के उत्थान में अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया। वे विश्व शांति के प्रबल पक्षधर थे एवं विश्व के सबसे प्रभावशाली आध्यात्मिक प्रणेताओं में गिने जाते थे।

प्रमुख स्वामी महाराज अर्थात् शांतिलाल पटेल का जन्म 7 दिसम्बर, 1921 को वदोदरा के निकट चानसाड़, गुजरात के एक कृषक परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री मोतीभाई पटेल और उनकी मां श्रीमती दिवालीबेन, दोनों ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे और अक्षर पुरुषोत्तम धर्म के अनुयायी थे।

शांतिलाल अपने बाल्यकाल से ही ईमानदार, विश्वसनीय, परिपक्व और दयालु हृदय के थे। वर्ष 1939 में उन्होंने आत्मत्याग किया और अपने गुरु, ब्रह्मस्वरूप शास्त्री जी महाराज से दीक्षा प्राप्त की और उन्हें साधु नारायणस्वरूपदास नाम प्रदान किया गया। युवा योगी प्रमुख स्वामी महाराज, अर्थात् साधु नारायणस्वरूपदास ने भादरन और खम्बात में संस्कृत और हिन्दी धर्मग्रंथों का अध्ययन किया और अंततः उन्हें “शास्त्री” की उपाधि प्रदान की गई।

प्रमुख स्वामी महाराज ने, स्वामिनारायण अक्षरधाम, दिल्ली और गांधीनगर तथा विश्वभर में केन्या, युगांडा, तंजानिया, दक्षिण सुडान, दक्षिण अफ्रीका, मलावी, बोतस्वाना, यूएई, बहरीन, पुर्तगाल, बेल्जियम, यूके, कनाडा, अमेरिका, न्यूजीलैंड, हांगकांग, सिंगापुर आदि में लगभग एक हजार से अधिक मंदिर और सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना की है। ये परिसर संस्कृति को संजोने और समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट नमूना हैं। ये परिसर शुद्धता, प्रेम, समर्पण, श्रद्धा, पुरुषार्थ और समर्पण आदि मूल्यों की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। प्रमुख स्वामी महाराज, अनेक राष्ट्राध्यक्षों और आध्यात्मिक गुरुओं के संपर्क में रहे थे।

बीएपीएस स्वामिनारायण संस्था के विश्वभर में 5,100 से भी अधिक केन्द्र हैं, 10 लाख से अधिक सदस्य और 50,000 से भी अधिक स्वयं-सेवक हैं जो 160 मानव-कल्याण कार्यों के लिए कार्यरत हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ में आर्थिक और सामाजिक परिषद में सलाहकार के रूप में मान्य, एक गैर-सरकारी संस्था, बीएपीएस विभिन्न क्षेत्रों जैसे शिक्षा, पर्यावरण, चिकित्सा, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में स्वेच्छिक सेवाएं प्रदान करती है।

13 अगस्त, 2016 को सारंगपुर, बेटाड़ जिला, गुजरात में उनका देहान्त हो गया।

डाक विभाग, “अक्षरधाम मंदिर, नई दिल्ली और प्रमुख स्वामी महाराज” पर से-टेनेंट स्मारक डाक-टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण : श्रीमती अलका शर्मा



तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा, 1500 पैसा
Denomination	:	500 p, 1500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	350230
Stamps Printed	:	350230
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00